ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 4, July - August 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 4, July-August 2024 |

भारत की विदेश नीति की विशेषताएं एवं चुनौतियाँ

Dr. Pooja Varun

Assistant Professor, Department of Political Science, S.D. Govt. College, Beawar, Rajasthan, India

सार: पहला उद्देश्य: भारत की विदेश नीति का पहला और व्यापक उद्देश्य-किसी अन्य देश की तरह-अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करना है। "राष्ट्रीय हितों" का दायरा काफी व्यापक है। उदाहरण के लिए हमारे विषय में इसमें शामिल है: क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए हमारी सीमाओं की सुरक्षा, सीमा पार आतंकवाद का मुकाबला करना, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, साइबर सुरक्षा। संक्षेप में, पहला उद्देश्य भारत को पारंपरिक और गैर-पारंपरिक खतरों से बचाना है।

दूसरा उद्देश्य: दूसरा उद्देश्य एक बाहरी परिवेश बनाना है जो समावेशी घरेलू विकास के लिए अनुकूल हो। मैं विस्तृत रूप से: हमें विदेशी भागीदारों, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, आधुनिक प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के रूप में पर्याप्त बाहरी आदानों की आवश्यकता है ताकि हम भारत में एक विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचा विकसित कर सकें, ताकि मेक इन इंडिया, स्किल्स इंडिया जैसे हमारे कार्यक्रमों को विकसित किया जा सके। डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटी, सफल हो सकते हैं, ताकि हमारे पास उन्नत कृषि और आधुनिक रक्षा उपकरण आदि हों। हाल के वर्षों में भारत की विदेश नीति के इस पहलू पर अतिरिक्त ध्यान केंद्रित करने के परिणामस्वरूप राजनीतिक कूटनीति के साथ आर्थिक कूटनीति को एकीकृत करके विकास की कूटनीति हुई है।

तीसरा उद्देश्य : पिछले 72 वर्षों में भारत एक गरीब विकासशील देश से उभरती हुई अर्थव्यवस्था में विकसित हुआ है और अब इसे एक महत्वपूर्ण वैश्विक अगुवा के रूप में गिना जाता है। इसलिए तीसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि भारत की आवाज वैश्विक मंचों पर सुनी जाए और भारत आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, निरस्त्रीकरण, भेदभाव रहित वैश्विक व्यापार वैश्विक शासन की संस्थाओं के सुधार, जो दुनिया के बाकी के रूप में ज्यादा के रूप में भारत को प्रभावित करते हैं। जैसे वैश्विक आयामों के मुद्दों पर विश्व जनमत को प्रभावित करने में सक्षम हो।

चौथा उद्देश्य: भारत के 30 मिलियन सशक्त प्रवासी हैं जिनमें अनिवासी भारतीय और भारतीय मूल के व्यक्ति शामिल हैं, जो पूरेविश्व में फैले हुए हैं। पिछले कुछ वर्षों में यह मेजबान देशों में एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभरा है। यह भारत और अन्य देशों के बीच मजबूत कड़ी प्रदान करता है और द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। चौथा और एक महत्वपूर्ण उद्देश्य भारतवंशियों को शामिल करना और विदेशों में उनकी उपस्थिति से अधिकतम लाभ प्राप्त करना है, जबकि साथ ही यथासंभव उनके हितों की रक्षा करना है।

I. परिचय

इन मौलिक सिद्धांतों में शामिल हैं:

1.पंचशील,या पांच गुण जिन पर 29 अप्रैल, 1954 को हस्ताक्षर किए गए जो औपचारिक रूप से चीन और भारत के तिब्बत क्षेत्र के बीच व्यापार पर समझौते में प्रतिपादित किए गए थे, ने और बाद में विश्व स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संचालन के आधार के रूप में कार्य करने के लिए विकसित हुए। ये पांच सिद्धांत हैं- (i)दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिए पारस्परिक सम्मान, (ii)परस्पर गैर आक्रामकता, (iii)परस्पर गैर हस्तक्षेप, (iv)समानता और पारस्परिक लाभ, और (v)शांतिपूर्ण सह अस्तित्व।

2. वसुधैव कुटुंबकम (विश्व एक परिवार है) इससे संबंधित है सबकासाथ, सबका विकास, सबका विश्वास की अवधारणा। दूसरे शब्दों में समूचा विश्व समुदाय एक ही बड़े वैश्विक परिवार का एक हिस्सा है और परिवार के सदस्यों को शांति और सद्भाव रखना चाहिए, मिलजुल कर काम करना चाहिए और एक साथ बढ़ने और पारस्परिक लाभ के लिए एक दूसरे पर भरोसा करना चाहिए।

3. भारत विचारधाराओं के पारगमन और व्यवस्थाओं में परिवर्तन के विरूद्ध है[1,2,3]

भारत लोकतंत्र में विश्वास करता है और समर्थन करता है; हालांकि भारत का विचारधाराओं के पारगमन में विश्वास नहीं है। भारत इसलिए चाहे वह लोकतंत्र हो, राजशाही हो या सैन्य तानाशाही सरकार के साथ खड़ा है। भारत का मानना है कि अपने नेताओं को चुनना या हटाना और शासन का रूप बरकरार रखना या बदलना देश की जनता पर निर्भर है। उपर्युक्त सिद्धांत का विस्तार करके भारत किसी अन्य देश या देशों के समूह द्वारा बल या अन्य साधनों के उपयोग से किसी विशेष देश में सत्ता परिवर्तन या क्षेत्रीय अखंडता के उल्लंघन के विचार का समर्थन नहीं करता। (इराक, लीबिया, सीरिया में अमेरिकी हस्तक्षेप अथवा जॉर्जिया, यूक्रेन आदि में रूस का हस्तक्षेप)

इसके साथ ही, भारत जहां भी क्षमता मौजूद है, वहां लोकतंत्र को बढ़ावा देने में संकोच नहीं करता; यह क्षमता निर्माण में सक्रिय रूप से सहायता प्रदान करने और लोकतंत्र की संस्थाओं को मजबूत करके किया जाता है, हालांकि, संबंधित सरकार की स्पष्ट सहमति से। (पूर्व अफगानिस्तान)

4.भारत एकतरफा प्रतिबंधों/सैन्य कार्रवाइयों का समर्थन नहीं करता
भारत किसी अन्य देश या देशों के समूह द्वारा किसी अन्य देश के विरूद्ध प्रतिबंध/सैन्य कार्रवाई करने के विचार का समर्थन नहीं करता है जब तक कि अंतर्राष्ट्रीय सर्वसम्मति के परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र द्वारा इन प्रतिबंधों/सैन्य कार्रवाइयों को मंजूरी नहीं दी जाती । इसलिए भारत केवल ऐसे शांति-सैन्य अभियानों में योगदान देता है जो संयुक्त राष्ट्र शांति सेनाओं का हिस्सा हैं।

(भारत ने लगभग 195,000 सैनिकभेजे है, जो किसी भी देश से भेजी गई सबसे बड़ी संख्या हैं, इसने 49 से अधिक मिशनों में भाग लिया और 168 भारतीय शांतिरक्षकों ने संयुक्त राष्ट्र मिशनों में सेवा करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र मिशनों के लिए प्रख्यात बल कमांडरभी उपलब्ध कराएं हैं और यह जारी है।

5. हस्तक्षेप: नहीं, मध्यवर्तन : हां
भारत का दूसरे देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने में विश्वास नहीं है। तथापि, यदि किसी देश द्वारा किसी अधिनियम-निर्दोष या जानबूझकर भारत के राष्ट्रीय हितों को अतिक्रमण किया जाता है, तो भारत त्वरित और समय पर हस्तक्षेप करने में संकोच नहीं करता है। जब मैं कहूंगा कि मध्यवर्तन हस्तक्षेप से गुणात्मक रूप से भिन्न है, विशेषकर जब संबंधित देश के अनुरोध पर मध्यवर्तन किया जाता है तो आप मुझसे सहमत होंगे। (उदाहरण: बांग्लादेश 1971, श्रीलंका में आईपीकेएफ (1987-90), मालदीव (1988)।

6. आक्रामकता पर रचनात्मक जुड़ाव
भारत, आक्रामकता पर रचनात्मक जुड़ाव की नीति की हिमाकत करता है। इसका मानना है कि हिंसक जवाबी कार्रवाई और टकराव ही मामलों को उलझा सकता है। युद्ध कोई समाधान नहीं है; हर युद्ध के बाद विरोधी दल अंतत वार्ता की मेज पर आते हैं जिसके द्वारा समय पर बहुत नुकसान पहले ही किया जा चुका होता है। यह विशेष रूप से पाकिस्तान पर लागू होता है-भारत में लक्षित राष्ट्र प्रायोजित आतंकवाद का मूल।

हालांकि,बातचीत की नीति को भारत की कमजोरी के रूप में गलत समझा जा सकता है। भारत द्वारा की गई प्रत्येक और वक्तव्य पर हमारे धैर्य का परीक्षण किया जाता है। सितंबर 2016 में पाकिस्तान के कब्जे वाले भारतीय क्षेत्र में आतंकी -लॉन्च पैड को निशाना बनाने के लिए सर्जिकल स्ट्राइक ऐसा ही एक उदाहरण है। पुलवामा आतंकवादी हमले के प्रतिशोध में फरवरी 2019 में बालाकोट में आतंकवादी शिविरों में हवाई हमला एक और उदाहरण है।

7. सामरिक स्वायत्तता: साझेदारी-हां, गठजोड़: नहीं
निर्णय लेने और सामरिक स्वायत्तता की स्वतंत्रता भारत की विदेश नीति की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है। इस प्रकार भारत साझेदारी में विश्वास करता है और गठबंधनों, विशेष रूप से सैन्य गठबंधनों से दूर है।

8. वैश्विक आयामों के मुद्दों पर वैश्विक सहमति
भारत विश्व व्यापार व्यवस्था, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, बौद्धिक संपदा अधिकार, वैश्विक शासन जैसे वैश्विक आयामों के मुद्दों पर वैश्विक बहस और वैश्विक सहमति की हिमाकत करता है।

भारत की विदेश नीति की प्राथमिकताएं:
1. गुटनिरपेक्षता से लेकर बहु-व्यस्तता तक
आजादी के बाद कई वर्षों तक भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति का पालन किया था और गुटनिरपेक्ष आंदोलन (गुटनिरपेक्ष आंदोलन) का नेतृत्व किया था। हालांकि, अमेरिका और सोवियत संघ नामक दो महाशक्तियों के बीच शीत युद्ध की पृष्ठभूमि में भारत को आमतौर पर सोवियत संघ की ओर अधिक झुकाव के रूप में देखा जाता था। 1991 में सोवियत संघ के पतन ने भारत के लिए युद्धाभ्यास करने के लिए एक बड़ा सामरिक स्थान बनाया। वर्तमान में, हालांकि भारत ने गुटनिरपेक्षता के बुनियादी सिद्धांत को नहीं छोड़ा है, भारत बहु-चर्चा की नीति में विश्वास करता है; हालांकि, यह दूसरे की कीमत पर एक के साथ संबंधों के निर्माण में विश्वास नहीं करता है।[4,5,6]

2. दक्षिण एशिया: भारत की पड़ोस पहले-नीति
भारत क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों के मामले में दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा देश है; भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत है और इसकी विकास दर इस क्षेत्र के अन्य लोगों की तुलना में अधिक है। अंतर्राष्ट्रीय मामलों में एक महत्वपूर्ण अदाकार के रूप में भारत का कद बढ़ रहा है। एक जिम्मेदार परमाणु राष्ट्र के रूप में भारत की साख और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में उसकी सिद्ध क्षमताओं को विश्व व्यापी स्वीकार किया जाता है। इन विषमताओं ने ऐतिहासिक रूप से भारत की तुलना में इस क्षेत्र में विश्वास की कमी की भावना पैदा की

है। पड़ोसी देशों में निहित स्वार्थों ने गलत आख्यान जारी किए हैं जैसेकि भारत एक "बड़े धमकाने" या "बड़े भाई" जैसे कार्य करता है कुछ देशों में समाज के ऐसे वर्ग हैं जो 'भारतीय विरोधी' को 'देशभक्ति' के बराबर मानते हैं।

मई 2014 में अनावरण की गई भारत की पड़ोस की पहली नीति में विश्वास की कमी को दूर करना, संबंधों को पुनर्निधारित करना और मित्रता के संबंधों का निर्माण करना और पूरी तरह से पारस्परिक रूप से लाभप्रद सहयोग को समझना है। अब तक का परिणाम मिला-जुला रहा है; पड़ोसियों के साथ जुड़ाव एक सतत प्रक्रिया है और संबंधों का स्तर अक्सर हमारे पड़ोस में सरकारों की स्थानांतरण प्राथमिकताओं से निर्धारित होता है। इस समय भूटान के साथ भारत के संबंध अनुकरणीय हैं; अफगानिस्तान, बांग्लादेश और मालदीव के साथ हमारे घनिष्ठ और सौहार्दपूर्ण संबंध हैं; श्रीलंका के साथ संबंधों में एक नया अध्याय उस देश में नई सरकार के चुनाव के साथ शुरू हो गया है। नेपाल के साथ संबंध कमोबेश एक एड़ी पर हैं। हाल ही में, पाकिस्तान के साथ संबंध इतिहास में सबसे न्यून स्तर पर हो गए।

दक्षिण एशिया: सार्क और बिम्सटेक
भारत, दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (सार्क) प्रक्रियाओं के माध्यम से दक्षिण एशिया के एकीकरण के लिए प्रतिबद्ध है। हालांकि, एक संगठन के रूप में सार्क को जब सुपुर्दगी के मामले में मापा गया तो अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा है। यह कई दशकों से अस्तित्व में है और फिर भी दक्षिण एशिया विश्व का सबसे कम एकीकृत क्षेत्र बना हुआ है। इसे बदतर बनाने के लिए भारत-पाकिस्तान संबंधों और पाकिस्तान की बाधा की नीति का सार्क में प्रगति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। काठमांडू में नवंबर, 2014 में 18वें शिखर सम्मेलन के बाद से सरकारों के प्रमुखों/राष्ट्राध्यक्षों के स्तर पर कोई सार्क शिखर सम्मेलन आयोजित नहीं किया गया है। 19वां शिखर सम्मेलन 2016 में इस्लामाबाद में आयोजित किया जाना था, जिसे भारत ने पाकिस्तान द्वारा सीमा पार आतंकवाद के निरंतर राज्य संरक्षण और प्रायोजन को देखते हुए बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया था। बांग्लादेश, भूटान और नेपाल ने अपने निर्णय में भारत का समर्थन किया था।

कमोबेश निष्क्रिय सार्क की पृष्ठभूमि में भारत ने दो आयामी दृष्टिकोण अपनाएं है। पहला, यह उतने ही सदस्यों के साथ उप-क्षेत्रीय परियोजनाएं शुरू करने के लिए तैयार है जितना कि सहमत हैं। नतीजतन भारत, नेपाल, भूटान और बांग्लादेश ने आगे बढ़कर जून 2015 में चार सार्क देशों के बीच सड़क यातायात की निर्बाध आवाजाही के लिए एक ऐतिहासिक मोटर वाहन समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिससे पाकिस्तान और अन्य लोग अलग हो गए। बाद में मई 2017 में, भारत ने दक्षिण एशिया उपग्रह-दक्षिण एशियाई क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की संचार सेवाएं प्रदान करने के लिए इसरो द्वारा निर्मित एक संचार उपग्रह का प्रक्षेपण किया; पाकिस्तान द्वारा आरक्षण के बावजूद इस उपग्रह को प्रक्षेपित किया गया था।

सार्क के प्रति प्रतिबद्ध रहते हुए भारत सार्क से आगे नजर आने लगा है। यह पांच सार्क देशों (भारत, भूटान, बांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका) और दक्षिण पूर्व के दो देशों के बीच अंतर-क्षेत्रीय सहयोग के लिए एक मंच के रूप में बिम्सटेक (बंगाल की खाड़ी पहल फॉर मल्टी-सेक्शियल टेक्निकल एंड इकोनॉमिक कोऑपरेशन) पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। (म्यांमार और थाईलैंड)। भारत ने नवंबर 2016 में ब्रिक्स गोवा शिखर सम्मेलन में ब्रिक्स के साथ आउटरीच बैठकों के लिए सार्क पर बिम्सटेक को जानबूझकर चुना।

भारत की नीति बिम्सटेक द्वारा सार्क की जगह नहीं है; दोनों प्रासंगिक हैं और पूरक और एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं।

3. भारत का विस्तारित पड़ोस:दक्षिण पूर्व एशिया: आसियान और पूर्वी एशिया
भारत के विस्तारित पड़ोस के संदर्भ में दक्षिण पूर्व एशिया के 10 आसियान देशों का अत्यंत महत्व है। एशियाई बाघों के प्रति भारत की पहली पहुंच 1990 के दशक के शुरू में सोवियत संघ के अंत, शीत युद्ध के अंत और अर्थव्यवस्था को उदार बनाने और इसे शब्द अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करने के हमारे अपने निर्णय की पृष्ठभूमि में की गई थी। परिणामत:, भारत की लुक ईस्ट नीति की घोषणा की गई; एलईपी तीन चरणों से गुजरी है। भारत की 'लुक ईस्ट' नीति (1992-2002) का पहला चरण आसियान केंद्रित था और मुख्य रूप से व्यापार और निवेश संबंधों पर केंद्रित था। इस अवधि के दौरान भारत ने 1992 में आसियान के साथ क्षेत्रीय वार्ता साझेदारी की जिसे 1996 में पूर्ण संवाद सहयोगी के दर्जे में अपग्रेड किया गया था, जब भारत भी आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ) में शामिल हो गया था। 2002 से भारत ने वार्षिक भारत-आसियान शिखर सम्मेलन स्तर की बैठकें आयोजित करना शुरू किया।

चरण-2 2003 में शुरू हुआ जब तत्कालीन विदेश मंत्री श्री यशवंत सिन्हा (हार्वर्ड विश्वविद्यालय में; 29 सितंबर, 2003) ने ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, चीन, जापान और दक्षिण कोरिया को कवर करते हुए पूर्व की सरकार की विस्तारित परिभाषा को साझा किया, जिसमें आसियान अपने मूल में था। उन्होंने कहा कि नए चरण में व्यापार से व्यापक आर्थिक और सुरक्षा मुद्दों पर बदलाव के रूप में भी चिह्नित किया गया है, जिसमें समुद्री गलियारों की रक्षा और आतंकवाद विरोधी गतिविधियों के समन्वय के संयुक्त प्रयास शामिल हैं। 2012 में, बातचीत साझेदारी के 20 वर्षों का समापन सामरिक साझेदारी में हुआ।

2014 में, प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली नई सरकार ने "लुक ईस्ट पॉलिसी (एलईपी) का नाम बदलकर "एक्ट ईस्ट पॉलिसी (एईपी)" रखा; यह रीब्रांडिंग से अधिक था।

तब से, सरकार ने आसियान के साथ संबंधों में अधिक "गतिशील" और "कार्रवाई उन्मुख" दृष्टिकोण की मांग की है। आसियान के भीतर एक उप क्षेत्र जिसका भारत के पूर्वोत्तर के साथ सापेक्ष निकटता अंतर्निहित लाभ है, सीएमएलवी देशों (कंबोडिया, म्यांमार, लाओस और वियतनाम) के साथ भारत के आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए काफी ध्यान दिया जा रहा है। अपनी सबसे महत्वपूर्ण पहल के रूप में भारत सरकार ने इस क्षेत्र में भारतीय निवेश को बढ़ावा देने के लिए 500 करोड़ रुपये (लगभग 71.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर) के कोष के साथ भारतीय निर्यात और आयात बैंक में 2016 में परियोजना विकास कोष की स्थापना की।

भारत की एक्ट ईस्ट नीति का सबसे महत्वपूर्ण प्रदर्शन 2018 गणतंत्र दिवस समारोह में राष्ट्राध्यक्षों और सरकारों के प्रमुखों की उपस्थिति थी। भारत को अब न केवल इस क्षेत्र के साथ अपने आर्थिक और सामरिक संबंधों को सुदृढ़ करने की आशा है बल्कि इस क्षेत्र में भी संभावित सुरक्षा संतुलन के रूप में उभरने की आशा है। भारत-अमेरिका-जापान-ऑस्ट्रेलिया क्वार्ड इस दिशा में सूचक हैं। क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (आरसीईपी) से बाहर रहने का हमारा हालिया निर्णय हमारे राष्ट्रीय हितों द्वारा निर्देशित था।

4. संयोजकता

भारत, दक्षिण एशिया को एकीकृत करने और दक्षिण एशिया को अन्य क्षेत्रों विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशिया और मध्य एशिया से जोड़ने के लिए भौतिक और डिजिटल संयोजकता पर काफी जोर देता है। दक्षिण एशिया के भीतर, बांग्लादेश-भूटान-भारत-नेपाल (बीबीआईएन) मोटर वाहन समझौता चार देशों के भीतर यात्री और मालवाहक वाहनों की आवाजाही के लिए निर्बाध संयोजकता प्रदान करती है।

कुछ परियोजनाएं जो अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, उनमें सामरिक रूप से महत्वपूर्ण चाबहार बंदरगाह का विकास शामिल है जो एक तरफ भारत को ईरान और अफगानिस्तान के साथ जोड़ता है और दूसरी ओर मध्य एशिया के साथ, पाकिस्तान को दरकिनार करते हुए: भारत और अफगानिस्तान के आम विरोधी। यद्यपि, भारत ने 2003 में इस संदर्भ में ईरान से चर्चा करना शुरू की थी, फिर भी भारत की ओर से वास्तविक प्रोत्साहन 2014 के मध्य में दिया गया था जिसके परिणामस्वरूप दिसंबर 2017 में बंदरगाह के पहले चरण के समझौतों पर हस्ताक्षर हुए और इसका उद्घाटन हुआ था। इसके बाद, भारत ने इसे भौतिक रूप में कब्जे में ले लिया है और यह पहला बंदरगाह इंडिया भारत के बाहर काम कर रहा है। अफगानिस्तान ने फरवरी 2019 में जरांज-चाबहार मार्ग का उपयोग करते हुए भारत को अपना पहला कार्गो भेजा था। भारत ने इससे पहले इस समुद्री मार्ग का इस्तेमाल करते हुए अफगानिस्तान को 2017के अंत में गेहूंमें भेजा था। भारत ने लैंडलॉक्ड अफगानिस्तान के लिए विश्वसनीय वैकल्पिक आपूर्ति मार्गों के रूप में दो प्रत्यक्ष एयर फ्रेट कॉरिडोर स्थापित किए हैं। दिल्ली-काबुल कॉरिडोर जून 2017 से चालू है और मार्च 2019 में दिल्ली ग्रेट कॉरिडोर का उद्घाटन किया गया था।[7,8,9]

निर्माणाधीन 1360 किलोमीटर त्रिपक्षीय भारत, म्यांमार थाइलैंड राजमार्ग और अगले वर्ष तक चालू होने की संभावना भारत के पूर्वोत्तर को आसियान से जोड़ देगी। भारत म्यांमार में खंडों के निर्माण की फंडिंग कर रहा है। भारत ने कंबोडिया, लाओस और वियतनाम से भी जुड़ने का प्रस्ताव किया है।

कलादान मल्टीमॉडल परिवहन परियोजना अभी तक एक और परियोजना है जो धीमी गति से आगे बढ़ रही थी और पर्याप्त धन के आबंटन से इसमें 2015 में तेजी लाई गई थी। इस परियोजना में समुद्री, अंतर्देशीय जल और सड़क प्रणालियों का उपयोग करके भारत के लैंडलॉक पूर्व को म्यांमार के माध्यम से मुख्य भूमि भारत से जोड़ने की बात कही गई है। केएमटी परियोजना जब पूरी हो जाएगी तो कोलकाता से मिजोरम तक परिवहन के लिए चार दिनों तक के समय में कटौती होगी और ऐप्स द्वारा दूरी950 किमी कम हो जाएगी।

5. वैश्विक आयामों के मुद्दे

आतंकवाद: भ्रष्टाचार, काला धन, मनी लॉन्ड्रिंग, भगोड़ा आर्थिक अपराधी

अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरूद्ध वैश्विक अभियान भारत सरकार के एजेंडे में उच्च स्थान पर बना हुआ है। यह समझते हुए कि अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक अभिसमय (सीसीआईटी) के मसौदे पर बातचीत धीमी गति से आगे बढ़ रही है, भारत ने अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के विरूद्ध राष्ट्रों की समिति को एक स्वैच्छिक बहुपक्षीय मंच के रूप में बनाने की योजना बनाई है। पाकिस्तान के एक निहित संदर्भ में भाजपा घोषणापत्र 2019 ने आतंकवाद का समर्थन करने वाले ऐसे देशों और संगठनों को अलग-थलग करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हर संभव कदम उठाने की भारत की प्रतिबद्धता की घोषणा की। भारत लॉबी जारी रखने की संभावना है ताकि पाकिस्तान को "ग्रे" से "फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (एफएटीए) की ब्लैक लिस्ट में ले जाया जा सके।

भारत को मानना होगा कि आतंकवाद से जुड़े मुद्दों पर पाकिस्तान की रक्षा और आतंकवाद के प्रति कुछ देशों का चयनात्मक दृष्टिकोण एक चुनौती है।

भारत भ्रष्टाचार, काला धन, धन शोधन, भगोड़ा, आर्थिक अपराधियों जैसे वैश्विक मंचों पर उठाने पर भी केंद्रित है। विजय मलाया, नीरव मोदी आदि जैसे आर्थिक अपराधियों का शीघ्र प्रत्यर्पण एक और प्राथमिकता होगी।

जलवायु परिवर्तन: भारत ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने की दिशा में अपना योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध है और साथ ही आशा करता है कि विकसित देश उत्सर्जन को कम करने और धन के माध्यम से विकासशील देशों की सहायता करने में और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए प्रौद्योगिकी, 19 वीं और 20 वीं सदी में अविवेकी औद्योगिक विकास के माध्यम से पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने के लिए विकसित दुनिया की ऐतिहासिक जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुएमहत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

निरस्त्रीकरण: भारत परमाणु हथियारों के अप्रसार के लिए प्रतिबद्ध है। परमाणु शक्ति के रूप में भारत का रिकॉर्ड बेदाग है। भारत वैश्विक, भेदभाव रहित और सत्यापन योग्य निरस्त्रीकरण के लिए अटल है।

वैश्विक शासन संस्थानों में सुधार भारत की राय है कि संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, आईएमएफ आदि जैसे वैश्विक शासन की संस्थाएं समकालीन दुनिया की जमीनी वास्तविकताओं का प्रतिनिधित्व नहीं करती हैं, जिनके बाद से उन में जबरदस्त बदलाव आया है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दशकों बाद संस्थाएं बनाई गई थीं, और इसलिए इसमें सुधार की जरूरत है।

चयनित देशों के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध

पाकिस्तान और चीन

हमारे निकटतम पड़ोस, अब मैं पाकिस्तान और चीन के साथ अपने संबंधों पर चर्चा करने का प्रस्ताव करता हूं।

पाकिस्तान

2014 में पाकिस्तान के साथ भारत के संबंध कम निम्न कोटि के थे। अपनी पड़ोस प्रथम नीति के अनुरूप, भारत ने पाकिस्तान के साथ अपने तनावपूर्ण संबंधों को सामान्य बनाने के लिए काफी प्रयास किए; 2016 के प्रारंभ तक यह बहुतायत से स्पष्ट था कि पाकिस्तानी विस्तृत राष्ट्र (सेना और आईएसआई) को बातचीत की बहाली में कोई दिलचस्पी नहीं थी और उसने भारत को नुकसान पहुंचाने के लिए सीमा पार आतंकवाद को बढ़ावा देना और समर्थन जारी रखा। दिसंबर, 2015 के अंत में लाहौर (काबुल से नई दिल्ली) में प्रधानमंत्री मोदी के अनिर्धारित पड़ाव के बावजूद एक सप्ताह के भीतर पठानकोट एयरबेस पर हमला करके पाकिस्तान ने हद कर दी थी।संबंधों को और झटका तब लगा जब जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले के उड़ी में सितंबर, 2016 में हुए आतंकी हमले में भारतीय सेना के 18 सैनिक मारे गए थे। भारत ने उड़ी हमले के एक सप्ताह के भीतर नियंत्रण रेखा के पार पाक के कब्जे वाले कश्मीर में आतंकवादी शिविरों पर एक सफल "सर्जिकल स्ट्राइक" को अंजाम दिया। इसी तरह फरवरी, 2019 में सीआरपीएफ के 40 जवानों की हत्या करने वाले पुलवामा हमले का पाकिस्तानी क्षेत्र के अंदर बालाकोट में आतंकी प्रशिक्षण केंद्र पर भारतीय वायुसेना के हवाई हमले में तुरंत जवाबी कार्रवाई की गई थी।

अनुच्छेद 370 के निराकरण के बाद कश्मीर मुद्दे का अंतर्राष्ट्रीयकरण करने के पाकिस्तान के बेचैन प्रयासों के कारण संबंध बद से बदतर हो गए हैं; इन प्रयासों को भारत के सक्रिय कूटनीतिक आक्रमण ने कुशलतापूर्वक विफल कर दिया ।

भारत ने "आतंक और वार्ता एक साथ नहीं हो सकते" की एक दृढ़ नीति अपनाई है, और यह बहुतायत से स्पष्ट कर दिया है कि, जब तक पाकिस्तान द्वारा राष्ट्र प्रायोजित और समर्थित आतंकवाद पर लगाम लगाने, भारत के विरूद्ध निशाना साधने, और कश्मीर में हस्तक्षेप को रोकनेके ठोस और सत्यापनयोग्य ठोस सबूत नहीं होंगे, तब तक कोई विचलन नहीं किया जाएगा।[10,11,12]

चीन

सितंबर, 2014 में चीन के राष्ट्रपति शी पिंग की भारत यात्रा के दौरान भारत ने दोस्ती का हाथ बढ़ाया और स्पष्ट संदेश दिया कि दोनों देशों को मिलकर काम करना चाहिए ताकि 21वीं सदी एशिया की हो सके। भारत-चीन संबंधों की गति में हालांकि भारत की इच्छा के अनुकूल विकास नहीं हुआ। भारत, चीन की महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव खासकर चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) का समर्थन नहीं करता जो पाक के कब्जे वाले कश्मीर से होकर गुजरता है और इस तरह संप्रभुता का मुद्दा उठाता है। चीन परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) में भारत की सदस्यता को भी अवरुद्ध कर रहा है और आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान को आतंकवाद का शिकार बताकर उसकी रक्षा करता है और इस बात की हिमाकत करता है कि आतंकवाद से जुड़े मुद्दों का समाधान करते समय किसी भी देश को बाहर नहीं किया जाना चाहिए। चीन अपनी ओर से भारत के साथ हाथ मिलाने के बारे में आशंकित है ताकि भारत-प्रशांत क्षेत्र में इसका मुकाबला करने के लिए चीन, विरोधी गठबंधन बना सके। चीन के पक्ष में व्यापार के भारी संतुलन से उत्पन्न मुद्दे हैं, और अनसुलझे सीमा विवाद भी हैं। सितंबर, 2017 में भारत और चीनी सैनिकों के बीच लंबे समय तक डोकलाम में आमने-सामने रहने से द्विपक्षीय संबंधों के लिए गंभीर खतरा पैदा हो गया था लेकिन सौभाग्य से कूटनीति के कुशल उपयोग के फलस्वरूप इसका समाधान हो गया था। अप्रैल 2018 में चीन में प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी पिंग के बीच अनौपचारिक शिखर सम्मेलन से जो समझ उभरी थी, उसे वुहान स्पिरिट के नाम से जाना जाता है, जिसका सार यह है कि दोनों पक्षों

को अभिसरणों को बनाने और संभालने के प्रयास बढ़ाने चाहिए। शांतिपूर्ण चर्चाओं के माध्यम से मतभेद, और भारत और चीन के बीच शांतिपूर्ण, स्थिर और संतुलित संबंध वर्तमान वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच स्थिरता के लिए एक सकारात्मक कारक होंगे, और आगे द्विपक्षीय संबंधों का उचित प्रबंधन होगा जो क्षेत्र के विकास और समृद्धि के लिए अनुकूल होगा, और एशियाई सदी के लिए स्थितियां पैदा करेगा। वुहान स्पिरिट को अक्तूबर, 2019 में प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच दूसरे अनौपचारिक शिखर सम्मेलन के माध्यम से आगे बढ़ाया गया था जो "चेन्नई कनेक्ट" के रूप में लोकप्रिय बताया गया था। भारत और चीन को बांटने वाले मुद्दों का निकट भविष्य में समाधान होने की संभावना नहीं है। इस बीच भारत से आशा की जाती है कि वह जब भी संभव हो (जैसे व्यापार और निवेश) चीन के साथ सहयोग करे, जब भी आवश्यक हो उसका (जैसे डोकलाम) सामना करे और जब भी अवसर की मांग हो (चीन के प्रभाव का मुकाबला करना) चीन के साथ प्रतिस्पर्धा करे।चीन परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) में भारत की सदस्यता को भी अवरुद्ध कर रहा है और आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान को आतंकवाद का शिकार बताकर उसकी रक्षा करता है और इस बात की हिमाकत करता है कि आतंकवाद से जुड़े मुद्दों का समाधान करते समय किसी भी देश को बाहर नहीं किया जाना चाहिए। चीन अपनी ओर से भारत के साथ हाथ मिलाने के बारे में आशंकित है ताकि भारत-प्रशांत क्षेत्र में इसका मुकाबला करने के लिए चीन, विरोधी गठबंधन बना सके। चीन के पक्ष में व्यापार के भारी संतुलन से उत्पन्न मुद्दे हैं, और अनसुलझे सीमा विवाद भी हैं। सितंबर, 2017 में भारत और चीनी सैनिकों के बीच लंबे समय तक डोकलाम में आमने-सामने रहने से द्विपक्षीय संबंधों के लिए गंभीर खतरा पैदा हो गया था लेकिन सौभाग्य से कूटनीति के कुशल उपयोग के फलस्वरूप इसका समाधान हो गया था। अप्रैल 2018 में चीन में प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी पिंग के बीच अनौपचारिक शिखर सम्मेलन से जो समझ उभरी थी, उसे वुहान स्पिरिट के नाम से जाना जाता है, जिसका सार यह है कि दोनों पक्षों को अभिसरणों को बनाने और संभालने के प्रयास बढ़ाने चाहिए। शांतिपूर्ण चर्चाओं के माध्यम से मतभेद, और भारत और चीन के बीच शांतिपूर्ण, स्थिर और संतुलित संबंध वर्तमान वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच स्थिरता के लिए एक सकारात्मक कारक होंगे, और आगे द्विपक्षीय संबंधों का उचित प्रबंधन होगा जो क्षेत्र के विकास और समृद्धि के लिए अनुकूल होगा, और एशियाई सदी के लिए स्थितियां पैदा करेगा। वुहान स्पिरिट को अक्तूबर, 2019 में प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच दूसरे अनौपचारिक शिखर सम्मेलन के माध्यम से आगे बढ़ाया गया था जो "चेन्नई कनेक्ट" के रूप में लोकप्रिय बताया गया था। भारत और चीन को बांटने वाले मुद्दों का निकट भविष्य में समाधान होने की संभावना नहीं है। इस बीच भारत से आशा की जाती है कि वह जब भी संभव हो (जैसे व्यापार और निवेश) चीन के साथ सहयोग करे, जब भी आवश्यक हो उसका (जैसे डोकलाम) सामना करे और जब भी अवसर की मांग हो (चीन के प्रभाव का मुकाबला करना) चीन के साथ प्रतिस्पर्धा करे।

दो बड़ी शक्तियां: संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस

संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ संबंधों की गति प्रभुत्व पर रही है सिवाय इसके कि हाल के दिनों में द्विपक्षीय संबंधों में कुछ अड़चनें आई हैं। अमेरिका ने रक्षा साझेदार का दर्जा दिया है जो भारत को नाटो सहयोगियों के समकक्ष रखता है। अमरीका इस बात को लेकर उत्सुक है कि भारत एशिया में चीन के लिए काउंटर वेट का काम करे। अमरीका यह भी चाहेगा कि भारत इस क्षेत्र के संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया और अन्य लोगों के साथ मिलकर समुद्री सुरक्षा, नौवहन की स्वतंत्रता, समुद्री डकैती और आपदा प्रबंधन जैसे मामलों में हिंद-प्रशांत महासागर में सुरक्षा प्रदाताओं के रूप में कार्य करे। इसका अनकहा उद्देश्य चीन के विस्तारवादी डिजाइनों को नियंत्रित करना है, विशेष रूप से दक्षिण चीन सागर में जहां चीन विवादित द्वीपों पर निर्माण गतिविधियां शुरू कर रहा है।

रूस और ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंध (कॉस्टा) (प्रतिबंध अधिनियम के माध्यम से अमेरिका के विरोधियों का प्रतिकार) का असर भारत की रक्षा खरीद (रूस से एस 400 मिसाइल रक्षा प्रणाली) और ईरान से तेल खरीदने में इसकी असमर्थता के कारण उसकी ऊर्जा सुरक्षा पर भी पड़ा। इसके अलावा, संयुक्त राज्य अमेरिका ने जीएसपी को वापस ले लिया है जिसके अंतर्गत 5.6 बिलियन डॉलर मूल्य के संयुक्त राज्य अमेरिका को भारत का निर्यात वरीय प्रशुल्क प्राप्त कर रहा था। भारत ने अमेरिका के भारत में कुछ निर्यातों पर उच्च शुल्क लगाकर जवाबी कार्रवाई की है। इन चिंताओं को अमेरिकी विदेश मंत्री की नई दिल्ली यात्रा और प्रधानमंत्री मोदी की राष्ट्रपति ट्रंप के साथ इस वर्ष जून में जी-20 शिखर सम्मेलन की तर्ज पर भेंट के दौरान संबोधित किया गया था। भारत यह संदेश देने में स्पष्ट और दृढ़ था कि अंतत भारत देश के राष्ट्रीय हितों में जो कुछ भी सबसे अच्छा समझता है वह करेगा।

सोवियत संघ और उसके उत्तराधिकारी राष्ट्र रूसी परिसंघ को भारत का विश्वसनीय, आजमाया और परीक्षित मित्र बताया गया है। काफी लंबी अवधि के लिए, रूस भारत के लिए रक्षा खरीद का प्रमुख स्रोत था; अब भी हम भारी नए, आधुनिक रक्षा उपकरणों और उपकरणों के पुर्जों के लिए रूस पर निर्भर है। 2014 में कार्यभार ग्रहण करने पर नई सरकार ने भारत की रक्षा आवश्यकताओं में विविधता लाने के लिए तेजी से और आक्रामक रूप से उसे आगे बढ़ाया था। हमारा यह कदम ऐसे समय में आया है जब अमेरिका और यूरोपीय प्रतिबंधों और तेल की कीमतों में कमी के कारण रूस की अर्थव्यवस्था मुश्किल दौर से गुजर रही थी। रक्षा स्त्रोतों में विविधता लाने की हमारी वास्तविक इच्छा को रूस ने गलत समझा क्योंकि भारत की रूस से दूरी थी। भारत ने स्थिति को सुधारने और आपसी विश्वास बहाल करने में तीव्रता थी। रूस के साथ हमारे संबंध अब दृढ़ आधार पर हैं और विशेषाधिकार प्राप्त सामरिक साझेदारी का ध्यान रक्षा, ऊर्जा, अंतरिक्ष और व्यापार और निवेश पर है।काफी लंबी अवधि के लिए, रूस भारत के लिए रक्षा खरीद का प्रमुख स्रोत था; अब भी हम भारी नए, आधुनिक रक्षा उपकरणों और उपकरणों के पुर्जों के लिए रूस पर निर्भर है। 2014 में

कार्यभार ग्रहण करने पर नई सरकार ने भारत की रक्षा आवश्यकताओं में विविधता लाने के लिए तेजी से और आक्रामक रूप से उसे आगे बढ़ाया था। हमारा यह कदम ऐसे समय में आया है जब अमेरिका और यूरोपीय प्रतिबंधों और तेल की कीमतों में कमी के कारण रूस की अर्थव्यवस्था मुश्किल दौर से गुजर रही थी। रक्षा स्त्रोतों में विविधता लाने की हमारी वास्तविक इच्छा को रूस ने गलत समझा क्योंकि भारत की रूस से दूरी थी। भारत ने स्थिति को सुधारने और आपसी विश्वास बहाल करने में तीव्रता थी। रूस के साथ हमारे संबंध अब दृढ़ आधार पर हैं और विशेषाधिकार प्राप्त सामरिक साझेदारी का ध्यान रक्षा, ऊर्जा, अंतरिक्ष और व्यापार और निवेश पर है।[15,16,17]

विदेश नीति की चुनौतियां

संतुलन अधिनियम: चल रहे संघर्षों को स्पष्ट करने के लिए,

चुनौतियां अनेक हैं। पड़ोस के देशों और रूस, अमेरिका, चीन जैसे प्रमुख शक्तियों के साथ स्थिर संबंध, जापान, फ्रांस, ब्रिटेन और जर्मनी जैसे विकसित देश और सऊदी अरब, यूएई, ईरान, इज़राइल जैसे संसाधन संपन्न देश विशेष रूप से भारत के हित में हैं विशेषकर कच्चे माल, आधुनिक प्रौद्योगिकी, निवेश, अत्याधुनिक हथियार, समावेशी घरेलू विकास की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए क्षेत्र में संयुक्त उपक्रम और मेक इन इंडिया, स्मार्ट सिटी, स्किल इंडिया जैसे कार्यक्रमों की सफलता और बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण के संदर्भ में। यह चुनौती चल रहे संघर्षों को स्पष्ट करने की है।उदाहरण के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस और ईरान और अमरीका के बीच, चीन-अमेरिका व्यापार युद्ध जिसके परिणामस्वरूप विशेष रूप से प्रतिबंध व्यवस्था है, जैसाकि पहले उल्लेख किया गया है, भारत के अहित के लिए है।

भारत की वैश्विक आकांक्षाएं

भारत राजनीतिक रूप से स्थिर देश है और उसकी अर्थव्यवस्था स्थिर है। भारत अपनी सैन्य शक्तियों में धीरे-धीरे लेकिन लगातार वृद्धि कर रहा है। एक बड़े बाजार के रूप में भारत विदेशी निवेश, संयुक्त उद्यम, कमोडिटी निर्यात के लिए एक आकर्षक गंतव्य है। हाल के वर्षों में,अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत का कद काफी बढ़ा है। यकीनन भारत का समय आ गया है। पिछले पांच वर्षों के दौरान भी विदेशी मामलों में कुछ हद तक मुखरता दिखाई दी, जब भारत ने अपना दम-खम दिखाया।

II. विचार-विमर्श

वर्ष 1947 में भारत की स्वतंत्रता से लेकर अब तक विश्व व्यापक रूप से बदल चुका है। इस दौरान अमेरिका और सोवियत संघ के द्विध्रुवीय विश्व से लेकर अमेरिकी आधिपत्य के एक संक्षिप्त एकध्रुवीय काल तक और अब चीन एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के द्विध्रुवीय प्रतियोगिता की ओर आगे बढ़ने से लेकर बहुध्रुवीयता के एक भ्रम तक विश्व ने कई स्वरुप देखे हैं।

आज के इस विशृंखल विश्व में भारत को अपनी विशिष्ट विदेश नीति पहचान को परिभाषित करने और नैतिक मूल्यों के साथ राष्ट्रीय हित को संतुलित करने के लिये अपनी संलग्नता की रूपरेखा को आकार देने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।
'स्टेट' और 'नेशन' के बीच क्या अंतर है?

- स्टेट (State) या राज्य में चार तत्त्व होते हैं- जनसंख्या, क्षेत्र, सरकार और संप्रभुता।
    - जबकि नेशन (Nation) या राष्ट्र साझा जातीयता, इतिहास, परंपराओं और आकांक्षाओं पर आधारित एक समुदाय होता है।
- एक वैधानिक निकाय के रूप में राज्य अपने लोगों की सुरक्षा एवं कल्याण के लिये उत्तरदायी है और यह बाह्य मानवीय कार्यकरण से संबंधित है।
    - जबकि राष्ट्र उन लोगों का एक निकाय होता है जो भावनात्मक, आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक रूप से एकजुट होते हैं।
- क्षेत्र (Territory) भी राज्य का एक अनिवार्य अंग होता है, क्योंकि यह राज्य का भौतिक तत्त्व होता है।
    - लेकिन एक राष्ट्र के लिये, क्षेत्र इसका अनिवार्य अंग नहीं है। राष्ट्र एक निश्चित क्षेत्र के बिना भी अस्तित्व में रह सकता है।
- अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा जैसे देशों में राज्य में कई राष्ट्र शामिल हैं और इस प्रकार वे 'बहुराष्ट्रीय समाज' (Multinational societies) हैं।
- भारत की विदेश नीति अपने सक्रिय राष्ट्रीय हित को कैसे परिलक्षित करती है?
- 'इंडिया फर्स्ट' की नीति: स्वतंत्रता के 75 वर्षों के साथ देश में 'इंडिया फर्स्ट' की विदेश नीति को अभिव्यक्त करने का वृहत आत्म-विश्वास और आशावाद मौजूद है। भारत अपने लिये स्वयं निर्णय लेता है और इसकी स्वतंत्र विदेश नीति किसी भयादोहन या दबाव के अधीन नहीं लाई जा सकती।

- विश्व की लगभग 1/5 आबादी के साथ भारत को अपना स्वयं का पक्ष चुनने और अपने हितों का ध्यान रखने का अधिकार है।
  - यह निश्चित रूप से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का एक मूल तत्त्व है कि राष्ट्रीय हित सर्वोपरि हैं और भारत ने भी अन्य देशों की तरह विदेशी एवं राष्ट्रीय सुरक्षा नीतियों के अनुपालन में अपने हितों पर बल दिया है।

- यथार्थवादी कूटनीति: आज के आत्मविश्वास से परिपूर्ण भारत के पास वैश्विक फलक पर अपनी नई आवाज़ है जिसकी जड़ें घरेलू वास्तविकताओं एवं सभ्यतागत लोकाचार में निहित होने के साथ ही स्वयं के प्रमुख हितों की खोज में गहराई से जमी हैं।
  - जैसा कि भारतीय विदेश मंत्री ने 'रायसीना डायलॉग' में टिप्पणी की थी कि ''विश्व को खुश करने की कोशिश करने के बजाय 'हम कौन हैं' के आधार पर विश्व से संलग्न होना बेहतर है।'' भारत अपनी पहचान और प्राथमिकताओं को लेकर पर्याप्त आत्म-विश्वास रखता है, दुनिया भारत के साथ इसकी शर्तों पर संलग्न होगी।
- अपने लाभ के लिये शक्ति संतुलन बनाए रखना: चीन की 'बेल्ट एंड रोड' पहल को वर्ष 2014 में ही चुनौती दे देने वाली एकमात्र वैश्विक शक्ति होने से लेकर एक मज़बूत सैन्य कार्रवाई के साथ चीनी सैन्य आक्रमण का जवाब देने वाले देश के रूप में भारत ने दृढ़ता का परिचय दिया है।
  - दूसरी ओर, भारत ने किसी औपचारिक गठबंधन में शामिल हुए बिना ही अमेरिका के साथ एक कार्यकरण संबंध का विकास किया है और घरेलू क्षमताओं के निर्माण के लिये पश्चिमी देशों से संलग्नता बढ़ाई है।
    - भारत संलग्नता में अत्यंत व्यावहारिक रहा है और शक्ति के मौजूदा संतुलन का उपयोग अपने लाभ के लिये करने की इच्छा रखता है।
- बढ़ते आर्थिक संबंध: चूँकि शेष विश्व के साथ भारत की आर्थिक अन्योन्याश्रयता गहरी होती गई है, यह अपने उत्पादों, कच्चे माल के स्रोतों और इसके विस्तारित विदेशी सहायता के संभावित प्राप्तकर्त्ताओं के लिये बाज़ारों के प्रति अधिक चौकस हो गया है।

बहु-संरेखित/बहुपक्षीय दृष्टिकोण: चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड/Quad) से लेकर ब्रिक्स (BRICS) तक, भारत कई समूहों की सदस्यता रखता है।

प्रायः इसे पुरानी शैली की संलग्नता के रूप में देखा जाता है। हालाँकि भारत अपनी प्राथमिकताओं को अधिक प्रत्यक्ष तरीके से अभिव्यक्त और प्रोत्साहित करने लगा है।

हस्तक्षेप और अनुचित हस्तक्षेप: भारत अन्य देशों के आंतरिक मामलों में अनुचित हस्तक्षेप (Iinterference) में विश्वास नहीं करता है। हालाँकि, यदि किसी देश द्वारा किये गए किसी सायास या निष्प्रयास कार्यकरण में भारत के राष्ट्रीय हितों को प्रभावित करने की क्षमता है तो भारत त्वरित और समयबद्ध हस्तक्षेप (Intervention) करने में संकोच नहीं करता है।

भारत की विदेश नीति के नैतिक पहलू

पंचशील (Five Virtues): 29 अप्रैल, 1954 को हस्ताक्षरित 'चीन के तिब्बत क्षेत्र और भारत के के बीच व्यापार समझौते' में पहली बार व्यावहारिक रूप से 'पंचशील' के सिद्धांत को अपनाया गया था, जो बाद में विश्व स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिये आचरण के आधार के रूप में विकसित हुआ।

ये पाँच सिद्धांत हैं:
एक दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिये परस्पर सम्मान
परस्पर गैर-आक्रामकता
परस्पर गैर-हस्तक्षेप
समानता और पारस्परिक लाभ
शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व

वसुधैव कुटुम्बकम् (The World is One Family): 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भारतीय दर्शन 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' की अवधारणा को आधार प्रदान करता है।

दूसरे शब्दों में, भारत संपूर्ण विश्व समुदाय को एकल वृहत वैश्विक परिवार के रूप में देखता है, जहाँ इसके सदस्य सद्भाव से रहते हैं, एक साथ कार्य एवं विकास करते हैं और एक दूसरे पर भरोसा करते हैं।

सक्रिय और निष्पक्ष सहायता: भारत जहाँ भी संभव हो, लोकतंत्र को बढ़ावा देने में संकोच नहीं करता है।
- यह क्षमता निर्माण और लोकतंत्र की संस्थाओं को सशक्त करने में सक्रिय रूप से सहायता प्रदान करने के रूप में किया जाता है, यद्यपि ऐसा संबंधित सरकार की स्पष्ट सहमति से किया जाता है (उदाहरण के लिये अफगानिस्तान)।
- वैश्विक समस्या समाधान दृष्टिकोण: भारत विश्व व्यापार व्यवस्था, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, बौद्धिक संपदा अधिकार, वैश्विक शासन, स्वास्थ्य संबंधी खतरे जैसे वैश्विक आयामों के मुद्दों पर वैश्विक बहस एवं वैश्विक सहमति की वकालत करता है।
  - 'वैक्सीन डिप्लोमेसी' पहल के तहत भारत ने 60 मिलियन खुराक का निर्यात किया, जिनमें से आधे वाणिज्यिक शर्तों पर और 10 मिलियन अनुदान के रूप में प्रदान किये गए।

- भारतीय विदेश नीति के समक्ष विद्यमान वर्तमान चुनौतियाँ
- रूस-यूक्रेन संघर्ष: यह निश्चित रूप से एक जटिल अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक मुद्दा है जहाँ भारत जैसे देशों के लिये राजनीति और नैतिक अनिवार्यता के बीच एक पक्ष चुनना कठिन कार्य है।
    - रूस भारत का व्यापार भागीदार है जिसे यूरेशियाई क्षेत्र में एक बढ़त प्राप्त है। प्रत्यक्ष रूप से रूस के विरुद्ध जाकर भारत इस क्षेत्र में अपने हितों को खतरे में डाल देगा।
        - जैसा कि यथार्थवादी विवेक की मांग है, भारत रूस-यूक्रेन संघर्ष पर राजनीति के निर्देशों की उपेक्षा करते हुए सीधे एक नैतिक दृष्टिकोण नहीं अपना सकता।
- आंतरिक चुनौतियाँ: कोई देश बाह्य विश्व में शक्तिशाली नहीं हो सकता यदि वह घरेलू स्तर पर दुर्बल है।
    - भारत का 'सॉफ्ट पावर' तब उपयोगी होगा जब इसे 'हार्ड पावर' का समर्थन प्राप्त होगा।
        - भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने बार-बार ज़ोर देते हुए कहा था कि भारत विश्व मंच पर तभी प्रभावी भूमिका निभा सकता है जब वह आंतरिक और बाह्य, दोनों रूप से सशक्त हो।
- शरणार्थी संकट: वर्ष 1951 के शरणार्थी सम्मेलन और इसके 1967 के प्रोटोकॉल का एक पक्षकार नहीं होने के बावजूद भारत विश्व में शरणार्थियों के सबसे बड़े स्थल वाले देशों में से एक रहा है।
    - यहाँ चुनौती मानवाधिकारों और राष्ट्रीय हितों के संरक्षण को संतुलित करने की है। रोहिंग्या संकट के उभार के साथ प्रकट है कि समस्या के दीर्घकालिक समाधान के लिये भारत द्वारा अभी भी बहुत कुछ किया कर सकता है।
    - ये कार्रवाइयाँ मानवाधिकार के मामलों पर भारत की क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिति को निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी।
- पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के लिये सामूहिक दृष्टिकोण: भारत में वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने में अग्रणी भूमिका निभाने की क्षमता है, जो वर्ष 2070 तक 'नेट ज़ीरो' तक पहुँचने के लक्ष्य (वर्ष 2021 में आयोजित 26वें संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में घोषित) में परिलक्षित होती है।
    - पर्यावरणीय समस्याएँ सामाजिक प्रक्रियाओं से जुड़ी हुई हैं। सामाजिक, आर्थिक और साथ ही पारिस्थितिक स्तर पर संवहनीयता प्राप्त करने की आवश्यकता है जैसा कि सतत् विकास लक्ष्यों में रेखांकित किया गया है।
- आंतरिक और बाह्य विकास को संतुलित करना: भारत को एक बाह्य वातावरण के निर्माण के लिये प्रयास करना चाहिये जो भारत के समावेशी विकास के अनुकूल हो, ताकि विकास का लाभ देश के निर्धनतम व्यक्ति तक पहुँच सके।
    - यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि वैश्विक मंचों पर भारत की आवाज़ सुनी जाए और भारत आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, निरस्त्रीकरण, वैश्विक शासन से संबद्ध संस्थानों के सुधार जैसे वैश्विक आयामों के मुद्दों पर विश्व के विचार को प्रभावित करने में सक्षम हो।
- विदेश नीति में नैतिक मूल्यों का प्रवेश कराना: महात्मा गांधी ने कहा है कि सिद्धांत और नैतिकता से रहित राजनीति विनाशकारी होगी। भारत को नैतिक अनुनय के साथ सामूहिक विकास की ओर बढ़ना चाहिये और विश्व में अपने नैतिक नेतृत्व को पुनः प्राप्त करना चाहिये।
- बुनियादी सिद्धांतों को बनाए रखने के साथ-साथ नीति विकास: हम एक गतिशील दुनिया में रह रहे हैं। इसलिये भारत की विदेश नीति को सक्रिय एवं लचीला होने के साथ ही व्यावहारिक होना होगा ताकि उभरती परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया के लिये इसका त्वरित समायोजन किया जा सके।
    - हालाँकि अपनी विदेश नीति के कार्यान्वयन में भारत हमेशा बुनियादी सिद्धांतों की एक शृंखला का पालन करता है, जिस पर कोई समझौता नहीं किया जाता। ये बुनियादी सिद्धांत हैं:
        - राष्ट्रीय आस्था और मूल्य
        - राष्ट्रीय हित
        - राष्ट्रीय रणनीति
- वैश्विक एजेंडा को आकार देना: भारत के लिये अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में एक 'अग्रणी शक्ति' के रूप भूमिका निभा सकने की संभावनाओं का पता लगाना महत्त्वपूर्ण है, जो कि वैश्विक मानदंडों और संस्थागत वास्तुकला को आकार दे सके, न कि इन्हें दूसरों द्वारा आकार दिया जाए और भारत बस अनुपालनकर्त्ता हो।[18,19,20]
    - संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने की आकांक्षा इसी भूमिका से संबद्ध है, जिसके लिये बड़ी संख्या में देशों ने पहले ही समर्थन देने का वादा कर रखा है।
- विकास के लिये कूटनीति: अपने विकास प्रक्षेपवक्र को बनाए रखने के लिये भारत को पर्याप्त बाह्य आदान/इनपुट की आवश्यकता है।
    - मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, स्मार्ट सिटीज़, अवसंरचना विकास, डिजिटल इंडिया, क्लीन इंडिया जैसे हमारे कार्यक्रमों की सफलता के लिये विदेशी भागीदारों, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, वित्तीय सहायता और प्रौद्योगिकीय हस्तांतरण की आवश्यकता है।
        - भारत की विदेश नीति को विकास के लिये कूटनीति के इस पहलू पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये जहाँ आर्थिक कूटनीति को राजनीतिक कूटनीति के साथ एकीकृत किया जाए।

III. परिणाम

किसी भी विदेश नीति के उद्देश्य या एक सरकार की बाहरी गतिविधि - के लिए अपने अवसरों को अधिकतम और अपनी सीमाओं के बाहर से होने वाले जोखिम को कम करके लोगों के कल्याण और प्रगति को बढ़ावा देने के सरकार के घरेलू एजेंडे की सहायता करना है। प्रकट रूप से, लोगों के कल्याण का अनुसरण करने के लिए उन्हें जो जीवन शैली प्रिय है वे उसी पर आधारित है।

और, हमारे मूल्य और जीवन शैली हमारी प्राचीन सभ्यता में निहित हैं जो हमारे अद्वितीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान जमा की गई है ; इस विरासत को व्यापक रूप से भारत की सफलता के लिए आज एक कारण के रूप में स्वीकार किया है। लोकतंत्र के हमारे मूल्य, अभिव्यक्ति का स्वतंत्रता और विश्वास, सांस्कृतिक सारसंग्रहवाद, सामाजिक समावेश और अवसर की समानता हमारी राजनीति में एक मजबूत जीवंतता और संस्थागत लचीलेपन की ओर अग्रसर करती है। भारत के विकास मॉडल ने, अपने घरेलू वैधता के लिए बाहरी समर्थन की मांग नेतृत्व के बिना, सफलतापूर्वक काम किया है, दूसरी ओर एक सौम्य विदेशी छवि प्रस्तुत करने में सक्षम हुआ है जिसके साथ सभी प्रमुख देश संबंधों को विकसित करने के लिए सहज महसूस करते हैं।

हमारे राष्ट्रीय जीवन की इन विशेषताओं ने आजादी के बाद, 1947 से ही हमारी विदेश नीति को मजबूत किया है। विदेशी मामलों में कार्य की स्वतंत्रता ने, इसके व्यापक औद्योगिक आधार और बुनियादी ढांचे के निर्माण के द्वारा औपनिवेशिक युग की तकनीकी और औद्योगिक पिछड़ेपन से उबरने में भारत की मदद की है, हरित क्रांति के माध्यम से खाद्यान्न के अतिरिक्त उत्पादन हासिल करने में मदद की है,हमारे सामाजिक संकेतकों में, तकनीकी और ज्ञान के आधार और देशव्यापी आर्थिक एकीकरण के उच्च स्तर में काफी सुधार किया है ; सबसे महत्वपूर्ण बात - हमारे सार्वजनिक बहस में एक बिंदु जिसे आज पर्याप्त रूप से मान्यता प्राप्त नहीं है – सफल विकास मॉडल के जमीनी स्तर पर 'सशक्तिकरण पर जोर देने के साथ, भारत को विश्व बैंक की गिनी सूचकांक से मापे अनुसार कम से कम सामाजिक-आर्थिक रूप से असमान समाजों के बीच और दोनों विकासशील देश जैसेकि अमेरिका और चीन के साथ अनुकूल तुलना में रखा है।

भारत की विदेश नीति शीत युद्ध के बाद चुनौतियां
सबसे गंभीर बात, 1991 में सोवियत संघ के विघटन और दुनिया में एकमात्र महाशक्ति के रूप में अमेरिका के उद्भव की वजह से इस विदेश नीति का निर्माण, बड़ी शक्तियों द्वारा इसके घरेलू मामलों में अत्यधिक हस्तक्षेप न कर भारत को दूर रख हमारे लचीले राज्य संस्थाओं और अर्थव्यवस्था में योगदान दिया है और आईटी क्रांति के अनुरूप भू-राजनीतिक और भू-आर्थिक भूकंप का सामना करने में देश की मदद की है। इसने अमेरिका द्वारा निर्धारित स्वर और विषयवस्त के अनुसार वैश्वीकरण के प्रारंभ में सृजित अवसरों का लाभ लेने में सहायता की है। इसने हमारे इतिहास में उस मोड़ बिंदु पर जब केंद्र में अल्पकालिक सरकारों की अनिश्चितताओं के कारण, एक खाली खजाना और एक दोस्त और सोवियत संघ में हथियारों का एक स्रोत के गायब होने, सोवियत संघ के अफगानिस्तान से वापसी और जम्मू-कश्मीर में उग्रवादी नेतृत्व वाली गड़बड़ी की कील के बाद पाकिस्तान के विजयवाद के बादर भारत को अपनी कठिनाइयों और चिंताओं पर काबू पाने में मदद भी की है ।

देश आज कहां खड़ा है? दुनिया, वैश्वीकरण के युग में, प्रौद्योगिकी के कारण , आर्थिक संबंधों, देशों से बड़ी संख्या में और देशों द्वारा बड़ी संख्या में लोगों की आवाजाही , उनके किनारे पर संसाधनों और आर्थिक अवसरों का दोहन करने के लिए निर्धारित प्रयासों के साथ एक दूसरे के साथ गहराई से जुड़े हैं । उसके बड़े और काफी परिष्कृत अर्थव्यवस्था, बड़े और युवा कर्मचारियों की संख्या, तकनीकी शिक्षा के उच्च स्तर, चौड़े भौगोलिक पहुंच के साथ मजबूत रक्षा बलों, और, कम महत्वपूर्ण नहीं, सांस्कृतिक सारसंग्रहवाद की अपनी स्थायी परंपरा – ज़ाहिर है, बिना अंग्रेजी भाषा पर कमांड की भूल जैसी परिस्थितियों की वजह से भारत को सामाजिक-आर्थिक प्रगति के अपने राष्ट्रीय उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए अवसर प्रदान करते हैं। ये सभी कारक उन विविध देशों के लिए जो विरोधाभासी हितों का अनुसरण कर रहें हैं, भारत को एक आकर्षक आर्थिक और राजनीतिक पार्टनर बनाते हैं। भारत की सैन्य पहुंच, उसके भविष्य क्षमता के साथ, मदद करता है – और अपने हित के क्षेत्रों में शक्ति संतुलन प्रभावित करने के लिए आगे भी मदद कर सकता है। उपरोक्त कारणों के लिए, एक शक्ति या अन्य के साथ संबंध निर्माण के विकल्पों में भारत के लचीलेपन के कारण वैश्विक मामलों में उसकी साख आज महत्वपूर्ण विदेश नीति और कूटनीतिक लाभ उठाने की है। यही कारण है कि अपने पहले संबोधन में हाल ही प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय राजदूत को सलाह दी है कि भविष्य में भारत की भूमिका, एक एक संतुलन शक्ति के बजाय एक प्रमुख शक्ति के रूप में हो।

भूमंडलीकरण की चुनौतियां

जैसेकि वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं और बलों का लाभ लेने के लिए भारत के पास संस्थागत चपलता है,

यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि मौजूदा परिस्थितियां पूर्ववर्ती अवधि की तुलना में और अधिक जटिल हैं। और यह अहसास संस्थागत क्षमता निर्माण में व्यापक दिशा प्रयासों, राजनयिक सहित, की ओर ले जाना चाहिए चूंकि कई देशों को उनकी अक्षमता के कारण भयंकर नुकसान उठाना पड़ा है। इस भूमंडलीकरण अवधि को प्रक्रियाओं के मामले में और अंतरराष्ट्रीय संस्थागत क्षमता की

अपर्याप्तता के मामले, दोनों में काफी अनिश्चितता और अनुनमेय के रूप में वर्गीकृत किया गया है । प्रौद्योगिकी ने व्यक्तियों सशक्त बनाया है - दोनों तरह से अच्छी तरह से निपटारे और रूग्न निपटारे – की तुलना में राज्य जिसने सूचना के आधार पर और विनाशकारी शक्ति पर अपने एकाधिकार को खो दिया है। राष्ट्रीय सीमाओं के पार वैश्विक व्यापार और उत्पादन-लिंकेज में भारी उछाल ने, अपर्याप्त बहुपक्षीय संस्थागत क्षमता के कारण विनियमन के कठिन होने ने वैश्विक आर्थिक संकट को लगातार और अप्रत्याशित बना दिया है जिसमें कोई भी देश अछूता नहीं रहा- क्षमता की इस कमी ने गहराई से सभी देशों को ही प्रभावित नहीं किया है बल्कि अमेरिका के प्रभाव और चीन की त्वरित वृद्धि में कमी के रूप में वैश्विक शक्ति संतुलन को भी कम किया है।

विफल रही / असफल रहने वाले राज्यों की घटना, वर्तमान वैश्वीकरण के युग में हालांकि अनोखी नहीं है और अधिक व्यापक रूप से विश्व के अलग-अलग हिस्सों में इन दिनों आज हमारे अपने सहित दुनिया देखी है। आंशिक रूप से 1991 में महाशक्तियों में घरेलू भागीदारी के अंत की वजह से, राज्य की विफलता की प्रक्रिया प्रौद्योगिकी, अतिवादी विचारधाराओं और आतंकवाद में विश्वास रखने वाले व्यक्तियों के समूह के उद्भव के कारण और गंभीर हो गयी है ; इस सामाजिक विघटन के वातावरण ने प्रदेशों के नाममात्र नियंत्रण में राज्यों के खिलाफ "अनियमित" या "शहरी" युद्ध के चरण के लिए प्रेरित किया। विफल राज्यों ने, बहुपक्षीय वैश्विक संस्थानों की अपर्याप्त क्षमता के साथ संयोजन में, विद्यमान और नये बहुसंख्यक सुरक्षा खतरों को गंभीर बना दिया है। इन अपर्याप्त राज्य क्षमताओं ने भोजन, पानी और ऊर्जा की उपलब्धता पर और उनके अंतर-रिश्तों की जटिलता पर नकारात्मक रूप से प्रभाव डाला है।

वैश्विक कनेक्टिविटी और प्रौद्योगिकी के कारण, अतीत में क्या अप्रासंगिक होगा, वैश्विक चिंता का विषय बन गया है - जैसे सार्स या ईबोला के रूप में वैश्विक महामारी की तरह तेजी से प्रसार। इससे भी अधिक गंभीर भयावह जलवायु परिवर्तन, जिससे एक अस्तित्व खतरे की संभावना है, लेकिन यहां तक कि वर्तमान में, इस तरह के चक्रवात और सूखे के रूप में गंभीर मौसम की घटनाओं की बढ़ती आवृत्ति, राज्यों की राजनीतिक और आर्थिक स्थिरता के लिए गंभीर निहितार्थ हैं।

भारत की मौजूदा विदेश नीति की चुनौतियां

जैसेकि वैश्विक रुझान की भविष्यवाणी करना मुश्किल है,शक्ति का वैश्विक संतुलन बदल रहा है। उभरते देश जैसेकि चीन और भारत महसूस करते हैं कि वैश्विक शासन संरचना पर्याप्त रूप से उनके हितों का प्रतिनिधित्व नहीं करते - और इन शासन संरचनाओं के मौजूदा प्रबंधक, संरचना के अंतर्गत इन बढ़ती शक्तियों के "सह विकल्प" के मुद्दे का सामना कर रहे हैं।

शीत युद्ध के बाद की अवधि में, इसके विभिन्न चरणों के दौरान, कार्रवाई की अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए राजनीतिक और आर्थिक एजेंडे को लागू करने के लिए भारत का लक्ष्य महा शक्ति के दबाव का विरोध करना, राजनीतिक, सैन्य और अर्ध सैनिक विध्वंसक गतिविधियों की पूरी रेंज का मुकाबला, रक्षा तैयारियों को बनाए रखना और हमारी तकनीकी आत्मनिर्भरता की संभावनाओं की सुरक्षा और सामाजिक-आर्थिक विकास है।

1991 में अपनी आशंका के विपरीत भारत के अमेरिका संबंधों में काफी सुधार हुआ है क्योंकि एक स्थिर शक्ति के रूप में भारत को देखता है और उत्तरार्द्ध में चीन के खिलाफ जिसके साथ अपने संबंध काफी देर से खराब हैं लाभ उठाना चाहता है। पूर्व दिशा में शक्ति के संतुलन के स्थानांतरण से चीन को लाता है जिसके साथ भारत का एक जटिल रिश्ता है, चीजों के केंद्र में और वैश्विक भू-राजनीतिक भंवर के पास भारत को लाता है।

भारत का सुरक्षा वातावरण जटिल बना हुआ है उन कारकों के लिए नहीं जो अलग-अलग देशों के नियंत्रण में नहीं हैं। चीन और पाकिस्तान के साथ अस्थिर सीमा मुद्दे दैनिक आधार पर तनाव में रहते हैं। अफगानिस्तान में अंतरराष्ट्रीय सैनिकों की वापसी के बाद अनिश्चितता का सामना है। नेपाल भी राजनीतिक रूप से अस्थिर बना हुआ है और मालदीव में अशांति बढ़ रही है। श्रीलंका ने एक निर्णायक राष्ट्रपति पद के चुनाव में और एक दोस्ताना राष्ट्रपति के साथ जीत हासिल की है लेकिन तमिल मुद्दा अभी भी अस्थिर है। बांग्लादेश लगभग एक सतत आधार पर एक आंतरिक राजनीतिक टकराव में बंद है। म्यांमार में अभी भी सेना से लोकतांत्रिक सरकार के साथ एक अनिश्चित और असहज संक्रमण हो रहा है। समुद्री तरफ, भारत की बढ़ती पहुंच का अर्थ एक बार भौगोलिक दृष्टि से दूर समस्याएं अब घर के करीब दिखाई देती हैं - चाहे वे उत्तरी अरब सागर, दक्षिण चीन सागर, पूर्वी चीन सागर और प्रशांत जबकि हिंद महासागर, संभावित, एक तनाव की अवधि में प्रवेश कर रहा है । प्रवासी भारतीय दुनिया भर में फैले हैं लेकिन विशेष रूप से मध्य पूर्व में जो महत्वपूर्ण ऊर्जा आपूर्ति का एक स्रोत है, विदेशी नीति निर्माताओं को सूक्ष्म रूप से दुनिया भर के विकास घटनाक्रम का पालन करना जरूरी है।[17,18,19]

बहुपक्षीय स्तर पर, भारत ने वैश्विक संस्थानों के सुधार के लिए अभियान चलाया है जैसेकि संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के रूप में और सक्रिय रूप से इस तरह के जैसेकि सार्क, इब्सा, ब्रिक्स, जी 20 के रूप में बहुपक्षीय और क्षेत्रीय संगठनों में लगा हुआ है। इसकी मौजूदा बहुपक्षीय चुनौतियों में, जैसे कि डब्लयुएमडी प्रसार, अंतरिक्ष, साइबर, समुद्री, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक व्यापार व्यवस्था, आईपीआर वगैरह मुद्दे शामिल हैं।

भारत के समक्ष विदेश नीति की चुनौतियों की जटिलता जैसेकि दुनिया भर में है चुनौतियों के समग्र प्रतिबिंब के फैलाव के रूप में है। जबकि भारत एक पूर्ण युद्ध की संभावना का सामना नहीं कर रहा है, अपने दो पड़ोसियों जिनके साथ एक जटिल रिश्ता है, जिनमें से एक परमाणु हथियारों से लैस अर्थात् पाकिस्तान जो राजकीय नीति के साधन के रूप में सीमा पार से आतंकवाद का अनुसरण कर रहे हैं ; ''मूविंग पार्टस'' की एक बहुत की सरासर जटिलता जो वैश्विक स्थिति को चला रही है, जल्दी से नियंत्रण से बाहर होने वाली चीजें भारत के लिए काली छाया का सृजन कर सकती है। ऊपर चर्चा की गयी सभी चुनौतियां किसी न किसी रूप में भारत के पड़ोस में मौजूद हैं। संस्थागत लचीलापन और आजादी के बाद से भारत की विदेश नीति के मार्गदर्शक सिद्धांतों ने अच्छी तरह से देश को खड़ा किया हुआ है और आज के समय में और अनिश्चितता के समय में इन्हें सफलता के कारण के रूप में स्वीकार किया हैं। लेकिन तरलता और उभरती परिस्थितियों की अनिश्चितता ऐसी है कि भारत की विदेश नीति स्थापना को घुमाव की ओर सदा आगे रहने के लिए और जानकारी संतृप्ति के इस युग में भारत के बाहर शक्तिशाली राय बनाते हलकों द्वारा प्रेरित समूहविचार के नुकसान से बचने की जरूरत है।

विदेश नीति के लिए अनिवार्यता

क्षमता निर्माण के हिस्से के रूप में, भारत को दोनों 'पारंपरिक' और 'गैर-पारंपरिक' सुरक्षा चुनौतियों को पूरा करने की जरूरत है। 'पारंपरिक' सुरक्षा चुनौतियों को कठिन शक्ति, विशेष रूप से सैन्य आधार पर भारत के विदेशी संबंधों के प्रबंधन और बाहर से देश के भीतर आतंकवाद के आयोजन प्रबंध की आवश्यकता है।

'गैर-पारंपरिक' सुरक्षा चुनौतियां, राजनीतिक अस्थिरता और पड़ोस के देशों में विखंडन, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक आर्थिक झटके, पार राष्ट्रीय अपराध, राज्य प्राधिकरण की प्रौद्योगिकी उन्नत सहित सामाजिक मीडिया के माध्यम से द्रोही व्यक्तियों या व्यक्तियों के समूहों द्वारा उत्पन्न होती हैं । इन 'गैर पारंपरिक' द्वारा उत्पन्न विदेश नीति चुनौतियों को – एक अलग तरह के कूटनीतिक प्रयास और क्षमता के विभिन्न प्रकारों की आवश्यकता होती है जो एक गैर विरोधात्मक दृष्टिकोण से भी अमित्र सरकारों पर आधारित है; एक उदाहरण तीव्र पानी तनाव स्थिति में आपदा राहत और पुनर्वास या सीमा पार नदी बेसिन प्रबंधन की दिशा में आम दृष्टिकोण है।

इन विभिन्न तरह की चुनौतियों को पूरा करने के लिए संस्थागत क्षमता अलग और विरोधाभासी भी हैं और दोनों को समायोजित करने के लिए अनायास चपलता की आवश्यकता होती है। क्षमता निर्माण में लागत में कटौती मुद्दों पर कमांड की आवश्यकता है क्योंकि ये परिदृश्य के निर्माण के निरंतर अभ्यास से उत्पन्न होते हैं। इन क्षेत्रों में, यह विशेषज्ञता जैसेकि आज के श्रोताओं में है अत्यधिक प्रासंगिक हो जाता है।

नई सरकार की विदेश नीति दृष्टिकोण

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में नई सरकार ने आर्थिक कूटनीति पर जोर दे कर अपनी प्राथमिकता को लागू करने के लिए ' मेक इन इंडिया ' के द्वारा इसे अच्छी तरह से किया है। यह अपनी पहली कूटनीतिक पहलों में से एक के रूप में, ध्वनि और व्यावहारिक सोच पर आधारित है, पड़ोसियों तक पहुंच गया है। यह प्रोजेक्ट पॉवर से विमुखता नही दर्शाता क्योंकि प्रधानमंत्री की हाल ही में 'सागर यात्रा' ने भारत के गहरे समुद्री हितों को रेखांकित किया है। प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ, नए नेतृत्व द्वारा अपनाई व्यस्त राजनयिक व्यवस्था, इस सोच की पुष्टि करता है कि वैश्वीकरण के इस युग में, भारत का राष्ट्रीय हित केवल अपनी अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा और प्रभाव को बढ़ाने से हो सकता है। इन पहलों को बनाए रखना आसान नहीं हैं फिर भी, भारत की तुलना में देशों को अपने स्वयं के एजेंडा को आगे बढ़ाना एक दूसरे के साथ कड़ी प्रतिद्वंद्विता हैं। भारत के नेतृत्व को इस प्रकार, अपने वार्ताकारों की आँखों में एक ही समय में अपनी साख को बनाए रखने के लिए संस्थागत दक्षता और कूटनीतिक समझ रखने वालों से गठबंधन करना होगा। 'गैर-पारंपरिक' सुरक्षा खतरों के शमन एजेंडे का प्रारंभ, विशेष रूप से अपने पड़ोसियों के साथ अपने अंतरराष्ट्रीय संबंधों में रिश्ते सहजता और देश द्वारा सामना की जा रही हार्ड कोर सुरक्षा चुनौती का प्रबंधन करेगा देश के सामने आने वाली आम सुरक्षा खतरों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलेगी ; इस संबंध में भारत की क्षमता काफी है और आगे भी इसमें कौशलता लाई जा सकती है।

IV. निष्कर्ष

भारतीय विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएँ (लक्षण) निम्नलिखित हैं – 1. राष्ट्रीय हित – किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति का प्रमुख आधार राष्ट्रीय हित होता है। भारतीय विदेश नीति के निर्धारण में भी इस तत्त्व का विशेष महत्त्व है। भारतीय विदेश नीति में राष्ट्रीय हित के महत्व को स्पष्ट करते हुए विदेश नीति के सृजनकर्ता कहे जाने वाले भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री नेहरू का मत था कि "हम चाहे कोई भी नीति निर्धारित करें, देश की वैदेशिक नीति से सम्बन्धित की गयी चतुरता राष्ट्रीय हित को सुरक्षित रखने में ही निहित है। भारत की प्रत्येक सरकार अपने राष्ट्रीय हितों को ही प्राथमिकता और सर्वोपरिता देगी। कोई भी सरकार ऐसे आचरण का खतरा नहीं उठा सकती जो राष्ट्रीय हितों के प्रतिकूल हो।' 2. गुट-निरपेक्षता की नीति – गुट-निरपेक्षता अथवा असंलग्नता की नीति भारतीय विदेश नीति की प्रमुख विशेषता है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के समय सम्पूर्ण विश्व को दो गुटों में बँटा देख भारतीय प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने नव स्वतन्त्र राष्ट्रों के लिए एक पृथक् सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, जिसके अन्तर्गत नवे स्वतन्त्र राष्ट्रों द्वारा दोनों गुटों से पृथक् रहने की नीति को अपनाया गया। गुटों से पृथक् रहने की इसी नीति को गुट-निरपेक्षता की नीति के नाम से जाना जाता है। 3. मैत्री और

सह-अस्तित्व की नीति – भारतीय विदेश नीति की एक अन्य प्रमुख विशेषता मैत्री और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व पर बल देती है। भारत विश्व के सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को बनाने में विश्वास रखता है। 4. विरोधी गुटों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने पर बल – भारतीय विदेश नीति द्वारा विश्व के दोनों विरोधी गुटों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने के महत्त्वपूर्ण प्रयास किये गये हैं। इस सम्बन्ध में भारत ने विश्व राजनीति में शक्ति का सन्तुलन बनाये रखने में दोनों गुटों के मध्य कड़ी का कार्य किया है। 5. साधनों की पवित्रता की नीति – भारतीय विदेश नीति साधनों की पवित्रता पर विशेष बल देती है। यह नैतिकता व आदर्शवादिता का समर्थन करती है तथा अनैतिकता व अवसरवादिता का घोरें विरोध करती है। 6. पंचशील – भारत शान्ति का पुजारी है, इसलिए उसने विश्व शान्ति स्थापित करने की नीति अपनायी है। 1954 ई० में उसने पंचशील को अपनी विदेश नीति का अंग बनाया। पंचशील का सिद्धान्त महात्मा बुद्ध के उन पाँच सिद्धान्तों पर आधारित है जो उन्होंने व्यक्तिगत आचरण के लिए निर्धारित किये थे। पंचशील के सिद्धान्तों का सूत्रपात पं० जवाहरलाल नेहरू व चीन के प्रधानमन्त्री चाऊ-एन-लाई के मध्य तिब्बत समझौते के समय हुआ था। पंचशील के पाँच सिद्धान्त निम्नलिखित हैं – • सभी राष्ट्र एक-दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता और प्रभुसत्ता का सम्मान करें। • कोई राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण न करे और सभी राष्ट्र एक-दूसरे की स्वतन्त्रता का आदर करें। • एक-दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न किया जाए। • प्रत्येक राष्ट्र एक-दूसरे के साथ समानता का व्यवहार करे तथा पारस्परिक हित में सहयोग करे। • शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति का सभी राष्ट्र पालन करें। 7. निःशस्त्रीकरण में आस्था – भारत हमेशा विश्व-शान्ति का समर्थक रहा है, इसलिए भारत ने सदैव नि:शस्त्रीकरण की प्रक्रिया का समर्थन किया है। भारत का मत है विश्व-शान्ति तभी स्थापित की जा सकती है जब भय और आतंक का वातावरण उत्पन्न करने वाली शस्त्रों की दौड़ से दूर रहा जाए और सभी राष्ट्र संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रतिज्ञा-पत्र का पूर्ण ईमानदारी एवं सच्चाई से पालन करें। 8. संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ सहयोग – भारत ने सदा ही विश्व-हितों को प्रमुखता दी है। प्रारम्भ से ही भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ सहयोग किया है। इसके महत्त्व के विषय में पं० नेहरू ने कहा था कि, "हम संयुक्त राष्ट्र संघ के बिना आधुनिक विश्व की कल्पना नहीं कर सकते।' कोरिया, हिन्दचीन, साइप्रस एवं कांगो की समस्याओं के समाधान में भारत ने अपनी रुचि दिखलाई थी और संयुक्त राष्ट्र संघ के आदेश पर भारत ने यहाँ अपनी सेनाएँ भेजकर शान्ति-स्थापना में महत्त्वपूर्ण योग दिया था। भारत ने कभी अन्तर्राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन नहीं किया और संयुक्त राष्ट्र संघ के आदेशों का यथोचित सम्मान किया। भारत के यथोचित सम्मान दिये जाने के कारण ही भारत चार बार सुरक्षा परिषद् का अस्थायी सदस्य चुना गया। डॉ० राधाकृष्णन यूनेस्को के सर्वोच्च पद पर रहे। श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित साधारण सभा की सभापति रह चुकी हैं। प्रो० बी० ए० राव ने अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में न्यायाधीश के रूप में कार्य किया। 9. साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का विरोध – साम्राज्यवादी शोषण से त्रस्त भारत ने अपनी विदेश नीति में साम्राज्यवाद के प्रत्येक रूप का कटु विरोध किया है। भारत इस प्रकार की प्रवृत्तियों को विश्व-शान्ति एवं विश्व-व्यवस्था के लिए घातक एवं कलंकमय मानता है। 1956 ई० में जब इंग्लैण्ड व फ्रांस मिलकर मिस्र पर आक्रमण कर स्वेज नहर को हड़पना चाहते थे तो भारत ने इसे नवीन साम्राज्यवाद का घोर विरोध किया। भारत ने लीबिया, ट्यूनीशिया, मोरक्को, मलाया, अल्जीरिया आदि देशों के स्वतन्त्रता संग्राम का पूरा समर्थन किया। दक्षिणी अफ्रीका व रोडेशिया के प्रजातीय विभेद का भारत ने जोरदार विरोध किया और संयुक्त राष्ट्र संघ में यह प्रश्न उठाता रहा। के० एम० पणिक्कर के अनुसार, "भारत की नीति हमेशा से यही रही है कि यह पराधीन लोगों की स्वतन्त्रता के प्रति आवाज उठाता रहा है एवं भारत का दृढ़ विश्वास रहा है कि साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद हमेशा से आधुनिक युद्धों का कारण रहा है।" इस प्रकार भारत की विदेश नीति 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सिद्धान्त का पालन कर रही है।[20]

संदर्भ

1. "Indian economic growth rate eases" [भारत की आर्थिक विकास दर संतोषपरक] (अंग्रेज़ी में). बीबीसी न्यूज़. ३० नवम्बर २००७. मूल से 25 दिसंबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २४ जून २०१४.
2. ↑ "The Non-Aligned Movement: Description and History", nam.gov.za, The Non-Aligned Movement, 21 सितंबर 2001, मूल से 21 अगस्त 2011 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 23 अगस्त 2007
3. ↑ India's negotiation positions at the WTO (PDF), November 2005, मूल (PDF) से 13 सितंबर 2011 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 23 अगस्त 2010
4. ↑ Analysts Say India'S Power Aided Entry Into East Asia Summit. | Goliath Business News, Goliath.ecnext.com, 29 जुलाई 2005, मूल से 9 अगस्त 2011 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 21 नवम्बर 2009
5. ↑ "भारत की 37 देशों के साथ प्रत्यार्पण संधि है". पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार. 12 फ़रवरी 2014. मूल से 22 फ़रवरी 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 फ़रवरी 2014.
6. ↑ "ndia has Extradition Treaties in operation with 37 countries". पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार. 12 फ़रवरी 2014. मूल से 22 फ़रवरी 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 फ़रवरी 2014.
7. ↑ "From potol dorma to Jaya no-show: The definitive guide to Modi's swearing in" (अंग्रेज़ी में). फर्स्टपोस्ट. २६ मई २०१४. मूल से 28 मई 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २६ मई २०१४.
8. ↑ उप्पुलुरी, कृष्ण, संपा॰ (२५ मई २०१४). "Narendra Modi's swearing in offers a new lease of life to SAARC" (अंग्रेज़ी में). नई दिल्ली: डीएनए इण्डिया. मूल से 27 मई 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २६ मई २०१४.
9. ↑ Ganai, Naseer (26 February 2022). "India-Pakistan LoC Truce: One Year On, Peace Prevails" [भारत-पाकिस्तान एलओसी ट्रूस: एक साल बाद, शांति कायम]. Outlook.

10. ↑ Tony Allison (2001). Burma shows India the road to Southeast Asia. Asia Times. Retrieved 12 November 2011.
11. ↑ Years of Isolation Produced Intensely Poor Nation. New York Times (24 July 1988). Retrieved 12 November 2011.
12. ↑ Bhaumik, Subir. (26 September 2007) India-Burma ties. BBC News. Retrieved 12 November 2011.
13. ↑ Realism in India-Burma relations Archived 15 मई 2013 at the वेबैक मशीन. Financialexpress.com (15 September 2003). Retrieved 12 November 2011.
14. ↑ "Asia Times: Myanmar shows India the road to Southeast Asia". मूल से पुरालेखित 22 May 2001. अभिगमन तिथि 21 February 2015.
15. ↑ "Why India shifts its policy on Burma :: KanglaOnline ~ Your Gateway". Kanglaonline.com. मूल से 16 December 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 21 November 2009.
16. ↑ Srinivasan, Krishnan (5 November 2008). "The Telegraph – Calcutta (Kolkata) | Opinion | The absent neighbour". The Telegraph. Kolkota, India. मूल से 16 December 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 1 August 2010.
17. ↑ "Categories". Australian Broadcasting Corporation. मूल से 16 December 2008 को पुरालेखित.
18. ↑ "Investigative Reporting from the United Nations". Inner City Press. अभिगमन तिथि 21 November 2009.
19. ↑ "Burma to Allow 160 Asian Aid Workers". The Washington Post. 14 May 2008. अभिगमन तिथि 21 November 2009.
20. ↑ "ऑस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री की भारत यात्रा". पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार. 5 सितंबर 2014. मूल से 6 सितंबर 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 सितंबर 2014.

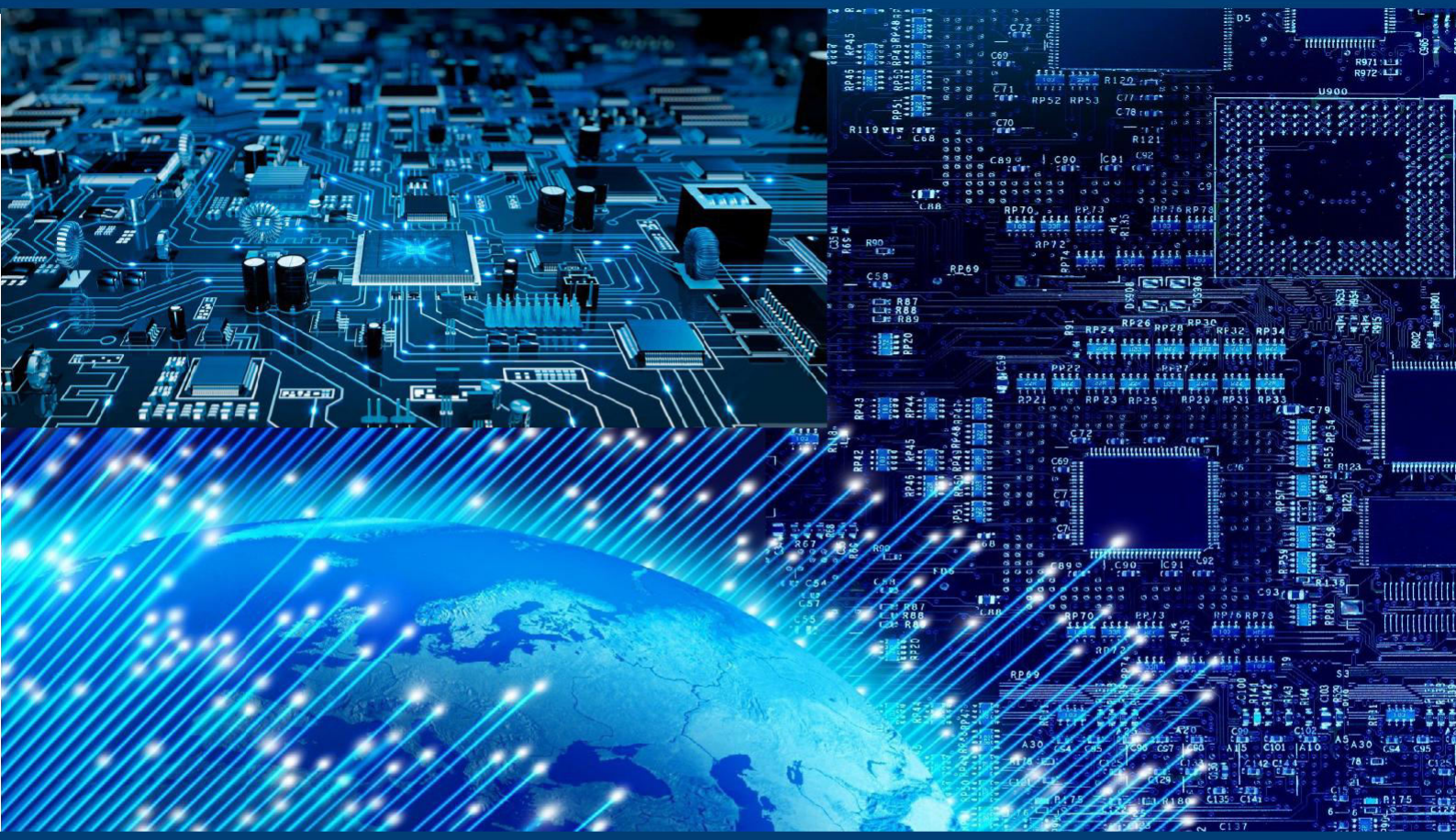

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |